ऐमिटी दर्पण
(जुलाई -सितम्बर 25)

विशेष आकर्षण

- **बच्चों के लेख**
- **स्वरचित कविताएँ**
- **यात्रा वृतांत**
- **उपलब्धियाँ**

शिक्षक भविष्य के शिल्पकार होते हैं, जो कि अपने हाथों से बच्चों के भविष्य को आकार देते हैं।

✍ प्रधानाचार्या की कलम से

ज्ञान की रोशनी से प्रकाशित रहे मन,
परिश्रम ही बनाता है जीवन को सम्पन्न ।

प्रिय विद्यार्थियों,

कड़ी मेहनत ही महान लक्ष्यों को प्राप्त करने का सबसे बड़ा साधन है। परीक्षा केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह आपकी मेहनत, लगन और आत्मविश्वास को परखने का अवसर है। याद रखें, सच्ची सफलता केवल पढ़ाई में नहीं, बल्कि समझदारी, अनुशासन और सही योजना में

भी निहित होती है।

परीक्षा के समय घबराने या तनाव लेने के बजाय अपनी तैयारी और ज्ञान पर भरोसा रखें। मेहनत करने वाले को कभी हार नहीं मिलती; सफलता हमेशा परिश्रमी का साथ देती है। असफलता से घबराएँ नहीं, क्योंकि असफलता अंत नहीं है, बल्कि एक अनुभव है। अनुभव ही हमें और मजबूत

बनाता है और आगे बढ़ने की दिशा दिखाता है।

शिक्षक आपको सही मार्ग दिखाते हैं, प्रेरित करते हैं और दिशा प्रदान करते हैं, लेकिन असली प्रयास और मेहनत आपको स्वयं करनी होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि परीक्षा के दिनों में आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। याद रखें, परीक्षा केवल आपके ज्ञान की जाँच है, न कि आपकी सम्पूर्ण क्षमता की।

यदि आप मेहनत, आत्मविश्वास और धैर्य को अपना साथी बना लें, तो निश्चित ही सफलता आपके कदम चूमेगी।

"मेहनत करें, आत्मविश्वास रखें, सफलता स्वयं आपका स्वागत करेगी।"

मीनू कँवर

प्रधानाचार्या

संपादकीय टीम

सम्पादिका - पूनम त्यागी

सह -संयोजक -दीपक कुमार

आज के दौर में शिक्षक की भूमिका

विद्यादाता गुणगुरुः प्रेरकः सत्यपथेषु यः।

भविष्यस्य निर्माणाय नमः तस्मै गुरवे सदा॥

आज के दौर में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी और गतिशील हो गई है। वे न केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित हैं, बल्कि छात्रों को 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक छात्रों के मार्गदर्शक, प्रेरक और सहायक होते हैं, जो उन्हें उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के लिए दिशा देते हैं और उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद करते हैं।

शिक्षक समाज के मार्गदर्शक और भविष्य निर्माण के आधार स्तंभ होते हैं। वे केवल ज्ञान का प्रसार ही नहीं करते, बल्कि विद्यार्थियों में कौशल विकास, आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान की क्षमता, रचनात्मकता और संचार कौशल को भी बढ़ावा देते हैं। साथ ही, शिक्षक बच्चों के भीतर नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारी और नागरिकता की भावना का संचार कर उन्हें बेहतर इंसान बनाने का कार्य करते हैं। वे विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता, सामाजिक परिवर्तन और सकारात्मक सोच की ओर प्रेरित करते हैं। आज के समय में यह आवश्यक है कि शिक्षक तकनीकी ज्ञान और नवीनतम शिक्षण विधियों का उपयोग कर बच्चों को सशक्त बनाएँ और उनके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें।

शिक्षकों की भी बच्चों से कुछ अपेक्षाएँ होती हैं, जैसे कि अनुशासन बनाए रखना, नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहना और अध्ययन के प्रति रुचि दिखाना। वे चाहते हैं कि बच्चे सकारात्मक रवैया अपनाएँ, सहयोग और टीम वर्क के माध्यम से सीखें तथा आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान में दक्ष बनें। इसके अतिरिक्त, शिक्षक बच्चों से स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और प्रभावी संचार कौशल की अपेक्षा रखते हैं। साथ ही, वे चाहते हैं कि विद्यार्थी नैतिक मूल्यों का पालन करें और जिम्मेदार नागरिक के रूप में समाज में योगदान दें। इन अपेक्षाओं को पूरा कर विद्यार्थी न केवल शिक्षा में सफल होते हैं, बल्कि जीवन में भी एक सशक्त, जिम्मेदार और आदर्श नागरिक बनते हैं।

सम्पादिका

पूनम त्यागी

बच्चों के लेख

संघर्ष: एक चुनौती, एक अवसर

जहाँ संघर्ष है, वहीं जीवन का सार है,
हर कठिनाई के पार, सफलता का द्वार है।

संघर्ष जीवन की वह परीक्षा है, जो हमें निखारती है और हमारे भीतर छुपी अद्भुत शक्ति को जगाती है। यह हमें सिखाता है कि असफलता केवल एक सीख है, न कि अंत।

वर्तमान में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चंद्रयान-3 मिशन की सफलता इसका उदाहरण है। चंद्रयान-2 की असफलता के बाद वैज्ञानिकों ने निरंतर मेहनत की और भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने वाला पहला देश बना दिया। यह बताता है कि हार के बाद भी प्रयास करना कितना आवश्यक है। आईएएस अधिकारी आरती डोगरा का जीवन भी संघर्ष का प्रतीक है। शारीरिक चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने समाज की सेवा में अपना स्थान बनाया और साबित किया कि संकल्प से हर बाधा को पार किया जा सकता है। ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा का संघर्ष भी प्रेरणादायक है। सीमित संसाधनों और चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने दुनिया के सामने भारत का परचम लहराया। अतः संघर्ष हमें सिखाता है कि जीवन में मुश्किलें केवल हमारे साहस और संकल्प को परखने के लिए आती हैं। यह हमें गिरने के बाद उठना और आगे बढ़ना सिखाता है।

संघर्ष की लहरें ही हमें पार लगाती हैं,
हर कठिनाई जीत का बीज बो जाती है।

कैरवी बुद्धिराजा - आठवीं-ब

स्वरचित कविताएँ

मानवता का भविष्य

इंसान ने बनाया चाँद तक का सफ़र,
धरती को छोड़ा, छुआ सितारों का घर।
लेकिन कहीं पीछे छूट गया वो सवाल,
क्या हमने सहेजा है मानवता का हाल?
ताकत और लोभ की होड़ लगी है,
हर गली ज़ख्मों से सजी है।
प्रकृति रोती है, नदियाँ सूखती हैं,
धरती की चीखें अब सुनाई देती हैं।
हम दौड़ रहे हैं प्रगति के नाम पर,
पर खो रहे हैं अपनी जड़ें हर कदम पर।
रोबोट से बातें, पर दिल खाली,
कभी सोचा, क्यों दुनिया इतनी है सवाली?
भविष्य हमारा है, पर राह कठिन,
मानवता के दीप जलाने होंगे हर दिन।
करुणा, प्रेम, और सहयोग के बीज,
यही होंगे कल के सपनों की नींव।
हर हाथ बने सहारा, हर दिल बने आस,
भूल जाएँ बैर, करें नई शुरुआत।
प्रकृति का आदर, जीवन का सम्मान,
यही है मानवता की सच्ची पहचान।
तो चलो, एक वादा करें,
अपनी दुनिया को सहेजें, इसे सुंदर करें।
भविष्य में जब देखें खुद को आईने में,
तो दिखे एक इंसान, इंसानियत से भरा।

हर्मन पाल सिंह - नवीं - अ

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति वास्तव में जीवन जीने की विधि है,
संस्कारों से सिंचित बहुमूल्य निधि है।

विश्व की पहली और महान संस्कृति,
अनेकता में एकता की अनूठी कृति

गंगा की अमृत धारा इसकी पहचान ,
संस्कार और मूल्यों से बनी ये महान ।

अपने में समेटे धर्म और भाषा की विविधता,

शिष्टाचार, संवाद, धार्मिक संस्कारों की परिशुद्धता।

परिवारों, जातियों और धार्मिक समुदायों का सभ्याचार,

विवाह, परंपराएं, रीति-रिवाज, उत्सवों की भरमार ।

इंसानियत, उदारता, एकता, परोपकार को अपनाएँगे,

मेलजोल ,समानता , सदव्यवहार से इसे अक्षुण्ण बनाएँगे।

हिंदी विभाग

पूनम त्यागी

हमारी कहानी हमारी ज़ुबानी

माता-पिता का है यह सपना,

आसमान छूकर नाम करना है अपना।

दिन-रात मेहनत करते हैं हम,

सफलता की राह में आगे बढ़ते जाते हैं हम।

परीक्षा देने के बाद आता है यही ख्याल,

क्या होंगे हमारे हाल ??

घाट-घाट का पानी पीकर हमने जाना,

कि मेहनत ही है सफलता की राह का सहारा।

लोगों का तो काम है कहना,

पर हमें तो है ईंट का जवाब पत्थर से देना।

ईंट का जवाब पत्थर से देना!!

ईशिका गर्ग

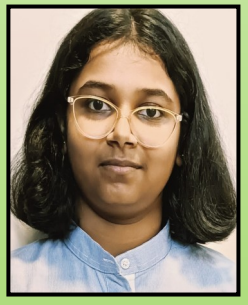

मिष्टी जैन

कक्षा 10 'डी'

शिक्षकों के प्रति आभार

ज्ञान की ज्योत जलाई आपने,

अंधकार मिटाया जीवन से।

सही दिशा की राह दिखाई

संस्कारों से सजाया हमें।

शब्दों में कैसे व्यक्त करें,

आपका एहसान महान।

जीवन का अर्थ सिखाया है,

आपने ही बनाया हमें विद्वान।

कभी डांट कर सिखाया हमें,

कभी प्यार से समझाया।

हर मुश्किल में साथ निभाया,

हर बार गिरने पर हाथ बढ़ाया।

आपके बिना अधूरा था जीवन,

आपने उसे पूरा किया।

गुरु हैं आप जीवन के आधार,

हमें सही मार्ग दिखाया।

शत-शत नमन है आप सभी को,

हर आशीष सर माथे चढ़ाएंगे।

शिक्षक हमारे दीपक हैं जीवन के,

हम जीवन भर कृतज्ञ हो जाएंगे।

तारिणी, कक्षा 12

यात्रा वृत्तांत

गाँव की पगडंडियों पर–दादी की यादों के साथ उत्तराखंड के चंबा स्थित अपने गाँव की इस यात्रा ने मेरे मन में भावनाओं का एक ऐसा समंदर जगा दिया, जिसे शब्दों में पिरोना आसान नहीं। यह यात्रा एक पारिवारिक जिम्मेदारी के तहत शुरू हुई थी–दादी की तेरहवीं संस्कार में सम्मिलित होने के लिए–परंतु इसमें जो भावनात्मक गहराई छुपी थी, उसका अंदाज़ा मुझे तब हुआ जब मैं गाँव की उस शांत वादियों में पहुँची जहाँ हर कोना दादी की यादों से भरा था।

गाँव पहुँचते ही जैसे बचपन की स्मृतियाँ जीवित हो उठीं। वही मिट्टी की खुशबू, वही खेतों में लहराते गेहूँ के पौधे, और वही पुराने पीपल के पेड़ के नीचे बैठी दादी की स्मित मुस्कान की कल्पना। पर इस बार दादी वहाँ नहीं थीं–उनकी जगह एक खालीपन था, एक शून्यता, जो हर चीज़ को देखते समय मन में उभर आती थी।

तेरहवीं के अनुष्ठान में पूरे परिवार का मिलन हुआ। वर्षों बाद भाई-बहनों से मिलना एक उत्सव जैसा अनुभव था। बचपन की शरारतें, वो आपसी नोकझोंक, सब कुछ जैसे समय के घेरे को तोड़कर फिर से जीवित हो गया। हमने घंटों तक बातें कीं, हँसे, पुरानी तस्वीरें देखीं और दादी से जुड़ी स्मृतियों को साझा किया।

धीरे-धीरे जब रस्में समाप्त हुईं, तब गाँव के वास्तविक जीवन से जुड़ाव शुरू हुआ। माँ के साथ रसोई में काम करना, गायों को चारा डालना, खेतों की मेड़ पर चलते हुए हल्की-सी धूप में पसीना बहाना–ये सब मुझे एक अलग ही शांति दे रहे थे। शहर की भागती-दौड़ती ज़िन्दगी से दूर, यहाँ हर काम में एक आत्मीयता थी, एक अपनापन।

एक दिन जब मैं आँगन में बैठी चाय पी रही थी, हवा का एक हल्का झोंका आया और पास रखे दादी के चश्मे को सरका गया। वह क्षण मेरे लिए बहुत भावुक था। मन अचानक नम हो गया। मैंने महसूस किया कि दादी भले ही अब शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं थीं, पर उनकी उपस्थिति हर साँस में, हर रिवाज़ में, हर रिश्ते में बनी हुई थी।

इस यात्रा ने मुझे एक साथ कई रंग दिखाए–वियोग का दुःख, पुनर्मिलन की खुशी, ग्रामीण जीवन का सादापन, और अपनों के साथ होने की गरिमा। गाँव की उन टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में चलते हुए, मुझे लगा जैसे जीवन की असली सुंदरता इन्हीं साधारण क्षणों में छिपी है।

जब मैं वापसी के लिए निकली, तो मेरा दिल भारी था। एक ओर मुझे फिर से शहर की चकाचौंध में लौटना था, वहीं दूसरी ओर गाँव की वो सुकून भरी ज़िन्दगी और दादी की यादें मुझे रोक रही थीं।

यह यात्रा मेरे लिए एक भावनात्मक सफ़र थी–खुशी और ग़म, साथ और बिछोह, शांति और हलचल–सब एक साथ अनुभव करने का। शायद यही जीवन है, जहाँ हर यात्रा हमें कुछ सिखाती है और हर विरह हमें किसी गहराई से जोड़ता है।

वाणी कोठारी - नवीं स

उपलब्धियाँ

अंतर-विद्यालयीय प्रौद्योगिकी प्रतियोगिता, रोबोट्रोनिक्स

हमारे विद्यालय के छात्रों ने 19 अगस्त 2025 को ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम (सेक्टर-46) द्वारा आयोजित एक अंतर-विद्यालयीय प्रौद्योगिकी प्रतियोगिता, रोबोट्रोनिक्स 2025 में सराहनीय प्रदर्शन किया। कई प्रतिष्ठित विद्यालयों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए, हमारे छात्रों ने निम्नलिखित पुरस्कार जीते:

तृतीय पुरस्कार - सरप्राइज़ इवेंट: अथर्व टंडन और अभ्युदय तोमर (कक्षा 11)

तृतीय पुरस्कार - गेमिंग इवेंट: आरव मित्तल (कक्षा 11) और अंशुमान जाना (कक्षा 10)

तृतीय पुरस्कार - स्क्रैच प्रोग्रामिंग: ईशान जैन और आर्शभ बंसल (कक्षा 6)

कक्षा आठवीं की छात्रा कैरवी बुद्धिराजा को साकेत में हुई अंतर विद्यालीय संस्कृत श्लोक गायन (गीता पाठ प्रतियोगिता) में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ

ज़ोनल स्तरीय प्रतियोगिता

दसवीं के छात्र मान भट्ट को (Sr.Boys) मोनो एक्टिंग में ज़ोनल स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।